

डैनियल की पुस्तक - संख्या एक सौ पंद्रह

अंतिम पीढ़ी की भविष्यसूचक विशेषताओं का अनावरण

Jeff Pippenger

2024-03-04

जिन्हें पीछे छोड़ दिया जा रहा है, ऐसे लोगों की अंतिम पीढ़ी में कुछ भविष्यवाणी-संबंधी विशेषताएँ पहचानी जाती हैं। तब वे विषधर साँपों की पीढ़ी हैं, क्योंकि उन्होंने शैतान का चरित्र ग्रहण कर लिया है। वे व्यभिचारियों की पीढ़ी हैं, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के शत्रुओं के साथ अपवित्र संबंध बना लिए हैं। वे उस अवस्था तक पहुँच गए हैं जहाँ वे देखते हैं, पर समझ नहीं पाते; वे सुनते हैं, पर ग्रहण नहीं कर पाते, क्योंकि वे परिवर्तित नहीं हुए हैं, जिसे उनके हृदय के मोटा हो जाने के रूप में दर्शाया गया है। मूसा ने सबसे पहले इसी घटना का उल्लेख किया था।

और मूसा ने समूचे इस्राएल को बुलाकर उनसे कहा, तुम्हारी आँखों के सामने यहोवा ने मिस्र देश में फिरौन पर, उसके सब सेवकों पर और उसके सारे देश पर जो-जो किया है, वे सब तुमने देखे हैं; वे बड़ी-बड़ी परीक्षाएँ, जो तुम्हारी आँखों ने देखीं, वे चिन्ह और वे बड़े-बड़े आश्चर्यकर्म; तौभी आज तक यहोवा ने तुम्हें समझने का मन, देखने को आँखें और सुनने को कान नहीं दिए। व्यवस्थाविवरण 29:2-4.

देखने और सुनने की लाओदीकियाई परिघटना के पहले उल्लेख में, परमेश्वर के लोग अपने आधारभूत इतिहास के चिन्हों और आश्चर्यों को देखने में असमर्थ हैं। यिर्मयाह इस परिघटना की पहचान अंतिम दिनों में 'मूर्ख कुँवारियों' के एक गुण के रूप में करता है, और इसे मूर्ख कुँवारियों द्वारा तीन स्वर्गदूतों के संदेशों को स्वीकार करने से इनकार के प्रतिनिधित्व के रूप में भी प्रस्तुत करता है, जो पहले स्वर्गदूत की इस घोषणा से आरम्भ होते हैं कि सृष्टिकर्ता परमेश्वर का भय मानो। इस विद्रोह के कारण वे अंतिम वर्षा प्राप्त नहीं करते।

याकूब के घराने में यह घोषित करो, और यहूदा में इसका प्रचार करो, यह कहते हुए: हे मूर्ख और निर्बुद्धि लोगो, अब यह सुनो; जिनकी आँखें हैं, पर वे देखते नहीं; जिनके कान हैं, पर वे सुनते नहीं: क्या तुम मुझसे नहीं डरते? प्रभु कहता है: क्या तुम मेरी उपस्थिति से नहीं काँपोगे, जिसने सदा के नियम से रेत को समुद्र की सीमा ठहराया है, कि वह उसे पार न कर सके? और यद्यपि उसकी लहरें उछलती-मचलती रहती हैं, तौभी वे प्रबल नहीं हो पातीं; चाहे वे गरजें, तौभी वे उसे पार नहीं कर सकतीं? परन्तु इस प्रजा का मन हटधर्मी और विद्रोही है; वे बगावत कर के भटक गए हैं। वे अपने मन में यह भी नहीं कहते: आओ अब हम अपने परमेश्वर प्रभु का भय मानें, जो अपने समय पर पहली और बाद की दोनों वर्षा देता है; वह हमारे लिए कटनी के नियत सप्ताह सुरक्षित रखता है। तुम्हारी अधर्मताएँ इन बातों को तुमसे दूर कर लाई हैं, और तुम्हारे पापों ने भली बातें तुमसे रोक रखी हैं। यिर्मयाह 5:20-25.

यहेजकेल ऐसे लोगों की पहचान "विद्रोही घराना" के रूप में करते हैं, जो "देखते हैं पर समझते नहीं" वाली विशेषता प्रकट करते हैं। वे एक विद्रोही घराना हैं जो अपनी नींव के इतिहास को देखना नहीं चाहते, जो मूर्ख कुँवारियाँ हैं, जो परिवर्तित नहीं हुई हैं क्योंकि वे पहले स्वर्गदूत का संदेश अस्वीकार करती हैं, जो कि उन सबको अस्वीकार करने के समान है, क्योंकि यदि तुम पहले स्वर्गदूत का संदेश स्वीकार नहीं करते, तो तुम न दूसरे को स्वीकार कर सकते हो और न तीसरे को। इस दशा में अन्तिम वर्षा के समय, इन कुँवारियों से अन्तिम वर्षा रोक ली जाती है। अपनी वाणी में जब यीशु ने इस विशेषता का उल्लेख किया, तब उन्होंने बोनवाले का दृष्टान्त प्रस्तुत किया।

परन्तु धन्य हैं तुम्हारी आँखें, क्योंकि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान, क्योंकि वे सुनते हैं। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि बहुत-से भविष्यद्वक्ता और धर्मी जन उन बातों को देखना चाहते थे जिन्हें तुम देखते हो, परन्तु उन्हें देख न सके; और उन बातों को सुनना चाहते थे जिन्हें तुम सुनते हो, परन्तु उन्हें सुन न सके। अतः बोनवाले का दृष्टान्त सुनो। जब कोई राज्य का वचन सुनता है और उसे समझता नहीं, तब दुष्ट आकर उसके हृदय में बोई हुई बात छीन ले जाता है। यह वही है जिसमें मार्ग के किनारे बीज बोया गया था। और जिसमें पथरीली भूमि में बीज

बोया गया, वह वह है जो वचन को सुनकर तुरन्त आनन्द से उसे ग्रहण करता है; परन्तु उसके भीतर जड़ नहीं होती, वह थोड़ी देर टिकता है; क्योंकि वचन के कारण जब क्लेश या उत्पीड़न उठता है, तो वह तुरन्त ठोकर खा जाता है। और जिसमें काँटों के बीच बीज बोया गया, वह वह है जो वचन को सुनता है; पर इस संसार की चिन्ता और धन की छलना उस वचन को दबा देती हैं, और वह निष्फल हो जाता है। परन्तु जिसमें अच्छी भूमि में बीज बोया गया, वह वह है जो वचन को सुनता और समझता है; और वही फल लाता है— कोई सौ गुना, कोई साठ, कोई तीस। उसने उनसे एक और दृष्टान्त कहा, "स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया; पर जब लोग सो रहे थे, तब उसका शत्रु आया और गेहूँ के बीच जंगली घास बो गया और चला गया। पर जब अंकुर निकले और बालें आईं, तब जंगली घास भी दिखाई देने लगी। तब गृहस्वामी के दास उसके पास आए और उससे कहा, 'स्वामी, क्या तू ने अपने खेत में अच्छा बीज नहीं बोया था? फिर उसमें जंगली घास कहाँ से आ गई?' उसने उनसे कहा, 'यह किसी शत्रु का काम है।' दासों ने उससे कहा, 'तो क्या तू चाहता है कि हम जाकर उन्हें उखाड़ लें?' पर उसने कहा, 'नहीं; कहीं ऐसा न हो कि तुम जंगली घास उखाड़ते-उखाड़ते गेहूँ भी उसके साथ उखाड़ डालो। कटनी तक दोनों को साथ-साथ बढ़ने दो; और कटनी के समय मैं काटने वालों से कहूँगा, पहले जंगली घास इकट्ठी करो और उन्हें जलाने के लिए गट्टरों में बाँध दो, पर गेहूँ को मेरे कोठार में इकट्ठा कर लो।'" मत्ती 13:16-30.

मूर्ख लोग खरपतवार हैं, और बुद्धिमान गेहूँ हैं। दस कुँवारियों के दृष्टान्त में तेल का होना ही दोनों वर्गों के बीच का भेद प्रकट करता है, और गेहूँ तथा खरपतवार के मामले में यह इस पर आधारित है कि बीज—जो वचन है—समझा गया है या नहीं। मूसा द्वारा ऐसे वर्ग का पहला उल्लेख, जो देखेगा नहीं और इसलिए समझेगा भी नहीं, उस संदेश को, जिसे समझा जाना है, आधारभूत इतिहास के चिन्हों और चमत्कारों के रूप में स्थापित करता है। एलन व्हाइट द्वारा विद्रोही घराने की अंधता के तत्त्वों के बारे में दिया गया अंतिम भविष्यसूचक संदर्भ यह दर्शाता है कि जिस बात को देखने की इच्छा सभी धर्मियों ने की, उसे देखने के लिए धन्य कही गई आँखों ने जो देखा, वह मिलराइट आंदोलन का इतिहास था।

"1840-1844 के बीच दिए गए सभी संदेशों को अब प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया जाना है, क्योंकि बहुत से लोग अपनी दिशा-बोध खो चुके हैं। ये संदेश सभी कलीसियाओं तक पहुँचने हैं।"

मसीह ने कहा, 'धन्य हैं तुम्हारी आँखें, क्योंकि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान, क्योंकि वे सुनते हैं। क्योंकि मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि बहुत से भविष्यद्वक्ता और धर्मी पुरुष उन बातों को देखने की इच्छा रखते थे, जिन्हें तुम देखते हो, पर उन्होंने उन्हें नहीं देखा; और उन बातों को सुनने की, जिन्हें तुम सुनते हो, पर उन्होंने उन्हें नहीं सुना' [मत्ती 13:16, 17]। धन्य हैं वे आँखें जिन्होंने 1843 और 1844 में देखी गई बातें देखीं। मैन्युस्क्रिप्ट रिलीज़ेस, खंड 21, 436, 437.

यीशु सदैव आरंभ के द्वारा अंत को दर्शाते हैं, और पहला संदर्भ उन लोगों का है जिनकी आँखें हैं, पर वे न देखते हैं और न समझते हैं, और अंतिम संदर्भ यह इंगित करता है कि विद्रोही घराने का मूलभूत इतिहास वही है जो दिखाई नहीं देता, और इसलिए अस्वीकार कर दिया जाता है, और इस प्रकार मूर्खों को अंतिम वर्षा को पहचानने से रोक देता है। 1840-1844 का इतिहास प्राचीन इस्राएल की मिस्री दासता से मुक्ति द्वारा प्रतीकित था। प्राचीन इस्राएल की प्रारंभिक परीक्षा में असफलता उन्हें कादेश तक ले आई, जहाँ उन्होंने दस जासूसों की झूठी रिपोर्ट स्वीकार की और उन्हें मिस्र वापस ले जाने के लिए एक नया नेता चुन लिया। चालीस वर्ष बाद उन्हें फिर से कादेश लाया गया, और मूसा असफल हुए, क्योंकि उन्होंने चट्टान पर दूसरी बार प्रहार किया।

यद्यपि मूसा असफल रहा, फिर भी येशू ने आगे बढ़कर उनका नेतृत्व किया और उन्हें प्रतिज्ञात देश में ले चला। कादेश में हुई अंतिम परीक्षा के साथ एक गंभीर विद्रोह जुड़ा था, क्योंकि यीशु सदैव आरंभ के द्वारा अंत को दर्शाते हैं, और चालीस वर्षों की शुरुआत में कादेश में दस भेदियों का विद्रोह, तथा चालीस वर्षों के अंत में कादेश में हुआ बड़ा विद्रोह—दोनों ही इसका उदाहरण हैं। फिर भी, कादेश में मूसा के विद्रोह के बावजूद, प्रतिज्ञात देश में प्रवेश की दृष्टि अब और विलंबित नहीं हुई।

1863 के विद्रोह में—जिसने 1888 के और प्रबल विद्रोह को जन्म दिया, जिसने 1919 के और प्रबल विद्रोह को जन्म दिया, जो अंततः 1957 के विद्रोह में परिणत हुआ—यीशु ने लाओदीकियाई एडवेंटवाद को कादेश में वापस लौटा दिया। वह उन्हें उस इतिहास में वापस ले आए जहाँ तीसरा स्वर्गदूत आया था और एक परीक्षात्मक प्रक्रिया आरम्भ की थी, जिसने अंततः 1863 के विद्रोह और लाओदीकिया की मरुभूमि में भटकते रहने के निर्वासन को प्रकट किया। तीसरा स्वर्गदूत 11 सितंबर, 2001 को लाओदीकियाई एडवेंटवाद के समापनकालीन इतिहास में तब प्रवेश कर गया जब प्रकाशितवाक्य अठारह का पराक्रमी स्वर्गदूत, जो तीसरा ही स्वर्गदूत है, नीचे उतरा। तब उसने घोषणा की कि बाबुल गिर चुका है, जैसा कि निम्नोद की मीनार के ढाए जाने द्वारा प्रतीकित था, जब न्यूयॉर्क सिटी के टावर गिरा दिए गए।

तीसरे स्वर्गदूत का संदेश समझा नहीं जाएगा; जो प्रकाश अपनी महिमा से पृथ्वी को आलोकित करेगा, उसे 'झूठा प्रकाश' कहा जाएगा, उन लोगों द्वारा जो उसकी बढ़ती हुई महिमा में चलने से इन्कार करते हैं। रिच्यू एंड हेराल्ड, 27 मई, 1890।

जैसा प्राचीन इस्राएल के साथ था, वैसा ही आधुनिक इस्राएल के साथ भी है। 11 सितंबर, 2001 को देखने वाली पीढ़ी अंतिम पीढ़ी है। यीशु ने लूका के अध्याय इक्कीस में "यह पीढ़ी" के बारे में कहा, और उन्होंने उस पीढ़ी की पहचान उन लोगों के रूप में की जो तब जीवित होंगे जब आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, जो उनके दूसरे आगमन पर होगा। वह पीढ़ी, जो मसीह की वापसी को देखने के लिए जीवित होगी, एक ऐसे चिन्ह को पहचान चुकी होगी जो उन्हें यह सिद्ध करता है कि वे अंतिम पीढ़ी हैं। वे जानेंगे और समझेंगे कि वे वही हैं जो तब जीवित हैं जब "हर दर्शन का प्रभाव" अब "विलंबित" नहीं किया जाएगा।

जब यीशु चेलों के साथ मंदिर से निकल रहे थे, तो चेलों ने उनसे यह समझाने को कहा कि मंदिर के विनाश के बारे में उनके वर्णन का क्या अर्थ था। वह बातचीत उस वार्तालाप का प्रतिनिधित्व कर रही थी जो अंतिम पीढ़ी में उसके शिष्य करेंगे। चेलों ने यह समझना चाहा कि जब उन्होंने बार-बार यह सिखाया है कि शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय लाओदीकिया एडवेंटिस्ट कलीसिया बहा दी जाएगी, क्योंकि उसके भीतर के उपासक उसके मुख से उगल दिए जाते हैं और वे अब उसकी ओर से बोलने वाले नहीं रहते, तब उनका क्या अर्थ है।

शिष्यों को उत्तर देते हुए यीशु ने यरूशलेम के विनाश और उसके बाद की घटनाओं का वर्णन किया, जो संसार के अंत तक चलती हैं। उन्नीसवें पद तक ऐतिहासिक सारांश प्रस्तुत करने के बाद, वह यरूशलेम के विनाश की चर्चा करता है—ऐसा विनाश जो क्रूस पर ही घटित हो सकता था, परन्तु परमेश्वर की करुणा और दीर्घ धैर्य के कारण लगभग चालीस वर्षों के लिए टाल दिया गया। उन चालीस वर्षों के अंत में कुछ शेष लोग विनाश से बच निकलेंगे, परन्तु केवल तब जब वे उस चिन्ह को पहचान लें जो उसने तब दिया था।

प्राचीन इस्राएल की शुरुआत में चालीस वर्षों की एक अवधि थी, जो दस जासूसों के विद्रोह पर दिए गए उस न्याय से आरंभ हुई, जिसे मूसा की मध्यस्थता के कारण चालीस वर्षों के लिए टाल दिया गया। प्राचीन इस्राएल के अंत में क्रूस के विद्रोह पर भी एक न्याय था, जिसे मसीह के दीर्घ-धैर्य और दया की मध्यस्थता के कारण चालीस वर्षों के लिए टाल दिया गया। दोनों इतिहासों में कुछ शेष लोग बच निकले। यीशु सदैव किसी बात के अंत को उसकी शुरुआत से दर्शाते हैं।

यीशु ने यरूशलेम के विनाश से जुड़े चिन्ह पर चर्चा की और उसे "प्रतिशोध के दिन" कहा।

और जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लो कि उसका उजाड़ होना निकट है। तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों की ओर भाग जाएँ; और जो उसके भीतर हों वे बाहर निकल जाएँ; और जो देहात में हों वे उसमें प्रवेश न करें। क्योंकि ये बदला लेने के दिन हैं, ताकि जो कुछ लिखा हुआ है वह सब पूरा हो। लूका 21:20-22.

"प्रतिशोध का दिन" से आशय अंतिम सात विपत्तियों से है, और इसी कारण सिस्टर व्हाइट यरूशलेम के विनाश को अंतिम दिनों में होने वाले परमेश्वर के कार्यकारी न्याय के साथ जोड़ती हैं।

हे राष्ट्रों, सुनने के लिए निकट आओ; हे लोगो, कान लगाओ: पृथ्वी सुने, और जो कुछ उसमें है; जगत और जो कुछ उससे निकलता है, सब सुनें। क्योंकि यहोवा का रोष सब राष्ट्रों पर है, और उसका प्रकोप उनकी सब सेनाओं पर; उसने उन्हें पूरी तरह नाश कर दिया है, वह उन्हें वध के लिए सौंप चुका है। उनके मारे हुए भी बाहर फेंक दिए जाएंगे, और उनके शवों से दुर्गंध उठेगी, और पर्वत उनके रक्त से पिघल जाएंगे। और आकाश की सारी सेना घुल जाएगी, और आकाश एक ग्रंथ की तरह लपेट दिया जाएगा; और उसकी सारी सेना गिर पड़ेगी, जैसे बेल से पत्ता गिरता है, और जैसे अंजीर-वृक्ष से गिरता हुआ अंजीर। क्योंकि मेरी तलवार स्वर्ग में नहलाई जाएगी; देखो, वह ईदूमेया पर, और मेरे शाप के लोगों पर, न्याय के लिए उतरेगी। यहोवा की तलवार रक्त से भर गई है; वह चर्बी से तृप्त की गई है—मेम्नों और बकरों के रक्त से, और मेदों के गुदों की चर्बी से—क्योंकि यहोवा के पास बोझा में एक बलि है, और ईदूमेया के देश में बड़ा वध। और उनके साथ एक-सींग वाले भी उतरेंगे, और बछड़े साँड़ों के साथ; और उनकी भूमि रक्त से भीग जाएगी, और उनकी धूल चर्बी से चिकनी कर दी जाएगी। क्योंकि यहोवा के प्रतिशोध का दिन है, और सिष्योन के विवाद के बदले का वर्ष। यशायाह 34:1-8.

यीशु ने नासरत में अपना पहला सार्वजनिक प्रवचन दिया, जिसमें उन्होंने स्वयं को मसीहा घोषित किया। वह प्रस्तुति भविष्यवाणी की दृष्टि से 'प्रथम उल्लेख के नियम' द्वारा संचालित थी। जिस पाठ को उन्होंने चुना, वह यह दर्शाता था कि उनके कार्य में 'प्रभु के प्रतिशोध के दिन' की घोषणा करना भी शामिल है। यशायाह के अनुसार, यह 'सिष्योन के विवाद के प्रतिफलों का वर्ष' भी है।

नासरत में ही मसीह ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई शुरू की और स्वयं को मसीहा घोषित किया। तब वे लोग, जिन्होंने उसके वचन सुने पर समझ न पाए, उसे पहाड़ से नीचे गिराकर मारने का प्रयास किया। उसकी सेवकाई की शुरुआत उसके गृहनगर के लोगों द्वारा उसे मारने के प्रयास से चिह्नित हुई, और उसकी सेवकाई के अंत में उसके ही लोगों ने उसे मार डाला। उसकी सेवकाई का उद्देश्य स्वयं को मसीहा के रूप में पहचान कराना था, जो वह अपने बपतिस्मा के समय अभिषिक्त होने पर बना। उसके बपतिस्मा के समय एक दिव्य चिह्न उतरा, जिससे आने वाले मसीहा की भविष्यवाणी की पूर्ति का अनुमोदन हुआ। 11 अगस्त, 1840 को एक दिव्य चिह्न उतरा ताकि उस इतिहास के परीक्षण संदेश की भविष्यवाणी का अनुमोदन हो। और 11 सितंबर, 2001 को एक दिव्य चिह्न उतरा ताकि उस इतिहास के भविष्यवाणी किए गए संदेश का अनुमोदन हो, जो अंतिम वर्षा का संदेश है।

"समरियों के साथ दो दिन परिश्रम करने के बाद, यीशु उन्हें छोड़कर गलील की अपनी यात्रा पर आगे बढ़ गए। वे नासरत में नहीं ठहरे, जहाँ उन्होंने अपना बाल्यकाल और आरंभिक युवावस्था बिताई थी। वहाँ के आराधनालय में, जब उन्होंने यह घोषित किया कि वे परमेश्वर के अभिषिक्त हैं, तो उनका स्वागत इतना प्रतिकूल रहा कि उन्होंने अधिक फलदायी क्षेत्र खोजने का निश्चय किया—ऐसे कान जो सुनें, और ऐसे हृदय जो उनका संदेश ग्रहण करें। उन्होंने अपने चेलों से कहा कि भविष्यद्वक्ता का अपने देश में आदर नहीं होता। यह कहावत उस स्वाभाविक अनिच्छा को प्रकट करती है जो बहुत-से लोगों में होती है कि वे ऐसे व्यक्ति में किसी अद्भुत और सराहनीय विकास को मानने से कतराते हैं, जिसने बिना आडंबर के उनके बीच जीवन बिताया हो और जिसे वे बचपन से निकटता से जानते रहे हों। उसी समय, यही लोग किसी अजनबी और दुस्साहसी व्यक्ति के दंभपूर्ण दावों पर बेतहाशा उत्साहित हो सकते हैं।" द स्पिरिट ऑफ प्रोफेसी, खंड 2, 151.

लूका अध्याय इक्कीस में, मसीह एक लाख चवालीस हजार की पहचान करते हैं, जो वह अंतिम पीढ़ी है जो नहीं मरती। वह ऐसा उस इतिहास को प्रस्तुत करके करते हैं जो शुरू हुआ था उनकी अंतिम उस यात्रा से, जब वे उस स्थान पर गए थे जो पहले उनके पिता का घर था, पर बाद में यहूदियों का घर बन गया था। जिस इतिहास का वर्णन यीशु ने आरंभ किया, उसमें वे उस बिंदु तक पहुँचे जहाँ यरूशलेम, और वह मंदिर जिसके बारे में चेलों ने जानना चाहा था, नष्ट किया जाने वाला था (70 ईस्वी)। उन्होंने उस विनाश को "प्रतिशोध के दिन" कहा, जो उनकी सेवा की प्रारंभिक घोषणा का एक भाग था। "प्रतिशोध के दिन" केवल 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश का ही प्रतिनिधित्व नहीं करते

थे, बल्कि परमेश्वर के क्रोध के उस समय का भी, जो सात अंतिम विपत्तियों में प्रदर्शित है।

क्योंकि यह सेनाओं के प्रभु परमेश्वर का दिन है, प्रतिशोध का दिन, कि वह अपने शत्रुओं से बदला ले; और तलवार भक्ष करेगी, और उनके रक्त से तृप्त होकर मतवाली हो जाएगी; क्योंकि सेनाओं के प्रभु परमेश्वर का युफ्रात नदी के किनारे उत्तर देश में एक बलिदान है। यिर्मयाह 46:10.

"बाबुल पर "प्रतिशोध का दिन", जिसका प्रतीक "यूफ्रेटीस नदी के किनारे उत्तरी देश में होने वाला बलिदान" है, शीघ्र आने वाले रविवार के कानून से आरंभ होता है."

यहोवा के क्रोध के कारण वह बसाई न जाएगी, परन्तु सर्वथा उजाड़ हो जाएगी; जो कोई बाबुल के पास से जाएगा, वह चकित होगा और उसकी सब मारों पर सीटी बजाएगा। बाबुल के विरुद्ध चारों ओर से युद्ध के लिये पंक्तिबद्ध हो जाओ; हे धनुष खींचनेवालो, उस पर तीर चलाओ; किसी बाण को न बचाओ, क्योंकि उसने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। चारों ओर से उसके विरुद्ध जयजयकार करो; उसने समर्पण कर दिया है; उसकी नीवें गिर गई हैं, उसकी दीवारें ढा दी गई हैं; क्योंकि यहोवा का पलटा है; उसके ऊपर पलटा लो; जिस प्रकार उसने किया, उसी प्रकार तुम भी उसके साथ करो। बाबुल से बीज बोनेवाले को, और कटनी के समय हंसिया चलानेवाले को काट डालो; अत्याचारी तलवार के भय से वे सब के सब अपनी-अपनी प्रजा की ओर फिर जाएँगे, और हर एक अपने-अपने देश को भाग जाएगा। इस्राएल तितर-बितर हुई भेड़ है; सिंहों ने उसे हाँक दिया है: पहिले अशूर के राजा ने उसे निगल लिया; और अन्त में बाबुल के राजा नबूकदनेसर ने उसकी हड्डियाँ तोड़ डालीं। इस कारण, सेनाओं का यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, यों कहता है: देखो, मैं बाबुल के राजा और उसके देश को दण्ड दूँगा, जैसे मैंने अशूर के राजा को दण्ड दिया। और मैं इस्राएल को फिर उसके निवासस्थान में ले आऊँगा, और वह कर्मल और बाशान में चराया जाएगा, और इफ्रैम और गिलाद के पर्वत पर उसका प्राण तृप्त होगा। उन दिनों और उस समय, यहोवा की यह वाणी है, इस्राएल का अधर्म ढूँढ़ा जाएगा, पर वह न मिलेगा; और यहूदा के पाप भी, परन्तु वे नहीं पाए जाएँगे; क्योंकि जिनको मैं बचा रखूँगा, उन्हें मैं क्षमा करूँगा। मेरातैम के देश पर चढ़ो, हाँ, उसके विरुद्ध, और पेकोद के रहनेवालों के विरुद्ध; यहोवा की यह वाणी है, नाश करो और उनके पीछे-पीछे पूरी रीति से विनाश करो, और जो कुछ मैंने तुझे आज्ञा दी है उसके अनुसार कर। देश में युद्ध का शब्द है, और बड़े विनाश का। कैसे पृथ्वी का हथौड़ा टूट-टूटकर चकनाचूर हो गया! कैसे बाबुल जातियों के बीच उजाड़ बन गया! मैं ने तेरे लिये फन्दा बिछाया है, और हे बाबुल, तू पकड़ी गई है, और तुझे मालूम भी न हुआ; तू पाई गई और पकड़ी भी गई है, क्योंकि तूने यहोवा के विरुद्ध विरोध किया। यहोवा ने अपना शस्त्रागार खोल दिया है, और अपने क्रोध के हथियार निकाल लाया है; क्योंकि यह कस्दियों के देश में सेनाओं का प्रभु यहोवा का काम है। दूर की सीमा से उसके विरुद्ध आओ, उसके भंडार-गृह खोलो; उसे ढेरों की नाईं ढेर कर दो, और उसे पूरी रीति से नाश कर दो; उसमें कुछ भी शेष न रहने दो। उसके सब बैलों को मार डालो; वे वध के लिये नीचे उतरें; हाय उन पर! क्योंकि उनका दिन आ पहुँचा है, उनके दण्ड देने का समय। बाबुल देश से भागकर बच निकलनेवालों का यह शब्द है, कि वे सियोन में जाकर हमारे परमेश्वर यहोवा का पलटा, उसके मन्दिर का पलटा, घोषित करें। बाबुल के विरुद्ध धनुर्धारियों को एकत्र करो; हे धनुष खींचनेवालो, उसके विरुद्ध चारों ओर डेरा डालो; उसमें से कोई निकल न पाए; उसके काम के अनुसार उसको बदला दो; जैसा उसने किया है, वैसा ही तुम भी उसके साथ करो; क्योंकि उसने यहोवा, इस्राएल के पवित्र, के विरुद्ध घमण्ड किया है। यिर्मयाह 50:13-29.

सन् 70 ईस्वी में यरूशलेम का विनाश, बाबुल की व्यभिचारिणी पर होने वाले दण्डात्मक न्याय का प्रतीक है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में शीघ्र आने वाले रविवार के कानून से आरम्भ होगा। यीशु जानते थे कि वे सन् 70 ईस्वी को शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के रूप में पहचान रहे थे, क्योंकि वही अपने वचन के लेखक हैं, और वही वचन हैं। यह समझने के लिए कि वह कौन-सा चिन्ह है जो यह पहचान कराता है कि अंतिम पीढ़ी आ पहुँची है, लूका अध्याय इक्कीस में यीशु जो भविष्यवाणी प्रस्तुत करते हैं, उसकी पृष्ठभूमि को पहचानना महत्वपूर्ण है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

मसीह का आगमन इस पृथ्वी के इतिहास के सबसे अंधकारमय काल में होगा। नूह और लूत के दिन मनुष्य के पुत्र के आने से ठीक पहले संसार की दशा को दर्शाते हैं। पवित्र शास्त्र, इस समय की ओर संकेत करते हुए, घोषित करते हैं कि शैतान अपनी समस्त शक्ति के साथ और 'अधर्म की हर प्रकार की छलना' के साथ काम करेगा। 2 थिस्सलुनीकियों 2:9, 10। इन अंतिम दिनों में तेजी से बढ़ते अंधकार, असंख्य भूलों, विधर्मों और भ्रमों से उसका कार्य स्पष्ट प्रकट होता है। शैतान न केवल संसार को बंदी बनाकर ले जा रहा है, बल्कि उसकी छलनाएँ हमारे प्रभु यीशु मसीह की नामधारी कलीसियाओं में खमीर की तरह फैल रही हैं। महान धर्मत्याग विकसित होकर आधी रात जितने गहन अंधकार में बदल जाएगा। परमेश्वर के लोगों के लिए वह परीक्षा की रात, रुदन की रात, और सत्य के कारण सताव की रात होगी। परन्तु उस अंधकार की रात में से परमेश्वर का प्रकाश चमकेगा।

वह 'अंधकार में से प्रकाश चमका देता है।' 2 कुरिन्थियों 4:6. जब 'पृथ्वी बेडौल और सूनी थी; और गहरे जल के ऊपर अंधकार था,' 'परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडरा रहा था। और परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो; और उजियाला हो गया।' उत्पत्ति 1:2, 3. इसी प्रकार आत्मिक अंधकार की रात में परमेश्वर का वचन निकलता है, 'उजियाला हो।' अपने लोगों से वह कहता है, 'उठ, चमक; क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और प्रभु की महिमा तुझ पर उदित हुई है।' यशायाह 60:1.

'देखो,' शास्त्र कहता है, 'अंधकार पृथ्वी को ढँक लेगा, और घोर अंधकार लोगों को; परन्तु यहोवा तेरे ऊपर उदय होगा, और उसकी महिमा तेरे ऊपर प्रगट होगी।' पद 2। मसीह, जो पिता की महिमा की ज्योति का प्रकाश हैं, संसार के लिए ज्योति बनकर आए। वे मनुष्यों के सम्मुख परमेश्वर को प्रकट करने आए, और उनके विषय में लिखा है कि वे 'पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषिक्त' थे, और 'भलाई करते फिरते रहे।' प्रेषितों के काम 10:38। नासरत की आराधनालय में उन्होंने कहा, 'प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने मुझे कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए अभिषिक्त किया है; उसने मुझे दूटे मन वालों को चंगा करने, बन्धियों के लिये छुटकारे का प्रचार करने, और अन्धों को दृष्टि मिलने की घोषणा करने, कुचले हुए लोगों को स्वतंत्र करने, और प्रभु के स्वीकार्य वर्ष का प्रचार करने के लिए भेजा है।' लूका 4:18, 19। इसी काम के लिए उन्होंने अपने चेलों को नियुक्त किया। उन्होंने कहा, 'तुम संसार की ज्योति हो।' 'ऐसा तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे स्वर्गीय पिता की महिमा करें।' मत्ती 5:14, 16। भविष्यद्वक्ता और राजा, 217, 218।